© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एवं राष्ट्रीय आन्दोलन पर अध्ययन

राम जुवारी पी. एच. डी. शोधार्थी
इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)
डॉ० श्रीमती सुधा सोनी, प्राध्यापक इतिहास विभाग
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रीवा (म०प्र०)

सारांश

तिलक ने अपने राजनीतिक जीवन का आरम्भ महाराष्ट्र में किया था। वे 1889 ई. में कांग्रेस के सदस्य बने तथा 1920 ई. तक देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने भाषणों एवं लेखों के माध्यम से जनता में चेतना उत्पन्न कर राष्ट्रीय आन्दोलन को जन-आन्दोलन के रूप में परिणित कर दिया तथा कांग्रेस को जन-साधरण की संस्था बना दिया।

मूल शब्दः राष्ट्रीय, आन्दोलन, भारतीय, संस्कृति, राजनीतिक इत्यादि ।

प्रस्तावना

तिलक को अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर गर्व था। उनका विश्वास था कि भारतीयों को अपनी संस्कृति के गौरव से परिचित करवाने पर ही उनमें आत्म-गौरव एवं राष्ट्रीयता की भावना पैदा की जा सकती है। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने समाचार-पत्र मराठा में लिखा था कि, सच्चा राष्ट्रवाद पुरानी नींव पर ही निर्माण करना चाहता है। जो सुधार पुरतान के प्रति घोर असम्मान की भावना पर आधारित है, उसे सच्चा राष्ट्रवाद रचनात्मक कार्य नहीं समझता। हम अपनी संस्थाओं की ब्रिटिश ढाँचें में नही ढालना चाहते, सामाजिक तथा राजनीतिक सुधार के नाम पर हम उनका अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते। अतः वे भारतीय संस्कृति के गौरव के आधार पर देशवासियों में राष्ट्र प्रेम उत्पन्न करना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने व्यायाम शालाएँ, अखाड़े, गौ-हत्या विरोधी संस्थाएँ स्थापित कीं तथा हिन्दू

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

देवताओं एवं वीरों की पूजा पर बल दिया। इस सम्बन्ध में गणपति तथा शिवाजी उत्सव प्रमुख हैं:

- **गणपति उत्सव-**

हालांकि यह उत्सव पहले भी महाराष्ट्र में प्रचलित था, किन्तु तिलक ने 1893 में इसे सामुहिक रूप से मानाने पर बल देकर राष्ट्रीय उत्सव बना दिया। नगरों एवं ग्रामों में व्यायामम हेतु गणपति संस्थाएँ स्थापित की गईं। इस उत्सव में जुलूस निकाले जाते थे, संगीत का कार्यक्रम होता था तथा भाषण दिए जाते थे। इस उत्सव द्वारा तिलक जनता में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना चाहते थे।

- **शिवाजी उत्सव-**

सारे महाराष्ट्र में शिवाजी का नाम वीरता, एकता, देशभक्त व देश प्रेम तथा श्रद्धा का प्रतीक माना जाता था। अतः जनता को एकता के सूत्र में बाँधने हेतु तिलक ने यह उत्सव मानना शुरू किया। सर्वप्रथम यह उत्सव 1895 ई. में रायगढ़ में तीन दिन तक मनाया गया। इसके बाद सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाए जाने के बावजूद यह उत्सव तिलक की अध्यक्षता में मनाया जाता रहा। तिलक ने शिवाजी का उदाहरण देते हुए कहा कि, जिस प्रकार शिवाजी ने स्वतन्त्रता हेतु आजीवन मुगलों से संघर्ष किया था, उसी प्रकार हमें भी अंग्रेजों से संघर्ष करना चाहिए।

- **बहिष्कार आन्दोलन**

अपनी मांगों को मनवाने के लिए उदारवादियों की अनुनय-विनय की नीति को अस्वीकार करते हुए उसे उग्रवादियों ने 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी। तिलक ने कहा कि 'हमारा उद्देश्य आत्म-निर्भरता है, भिक्षावृत्ति नहीं।' विपिन चन्द्र पाल ने कहा कि 'यदि सरकार मेरे पास आकर कहे कि स्वराज्य ले लो, तो मैं उपहार के लिए धन्यवाद देते हुए कहूँगा कि 'मै

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

उस वस्तु को स्वीकार नहीं कर सकता, जिसको प्राप्त करने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है।' इन नेताओं ने विदेशी माल का बहिष्कार, स्वदेशी माल को अंगीकार कर राष्ट्रीय शिक्षा एवं सत्याग्रह के महत्व पर बल दिया। उदारवादी नेता स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन को बंगाल तक ही सीमित रखना चाहते थे और उनका बहिष्कार आन्दोलन विदेशी माल के बहिष्कार तक ही सीमित था, किन्तु उग्रवादी नेता इन आन्दोलनों का प्रसार देश के विस्तृत क्षेत्र में करना चाहते थे। इनके बहिष्कार आन्दोलन की तुलना गांधी जी के 'असहयोग आन्दोलन' से की जा सकती है।

- **क्रान्तिकारी आन्दोलन के कारण**

बम और पिस्तौल की राजनीति में विश्वास रखने वाले क्रान्तिकारी विचारधारा के लोग समझौते की राजनीति में कदापि विश्वास नहीं करते थे। उनका उद्देश्य था- 'जान दो या जान लो।' बम की राजनीति उनके लिए इसलिए आवश्यक हो गयी थी, क्योंकि उन्हें अपनी भावनायें व्यक्त करने या आज़ादी के लिए संघर्ष करने का और कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। आतंकवादी शीघ्र-अतिशीघ्र परिणाम चाहते थे। वे उदारवादियों की प्रेरणा और उग्रवादियों के धीमें प्रभाव की नीति में विश्वास नहीं करते थे। मातृभूमि को विदेशी शासन से मुक्त कराने के लिए वे हत्या करना, डाका डालना, बैंक, डाकघर अथवा रेलगाड़ियों को लूटना सभी कुछ वैध समझते थे। क्रान्तिकारी विचारधारा के सर्वाधिक समर्थक बंगाल में थे। उन्हें ब्रिटिश हुकूमत के प्रति घृणा थी।

- **बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन**

अगर यह मान लिया जाये कि बंगाल क्रान्तिकारी आन्दोलन का गढ़ था, तो अतिश्योक्ति न होगी। बंगाल में क्रान्तिकारी विचारधारा को बारीन्द्र कुमार घोष एवं भूपेन्द्रनाथ (विवेकानन्द के भाई) ने फैलाया। 1906 ई. में इन दोनों युवकों ने मिलकर 'युंगातर' नामक समाचार पत्र

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

का प्रकाशन किया। बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरुआत 'भद्रलोक समाज' नामक समाचार पत्र ने की। इस समाचार पत्र ने क्रान्ति के प्रचार में सर्वाधिक योगदान दिया। पत्र के द्वारा लोगों में राजनीतिक व धार्मिक शिक्षा का प्रचार किया गया। बारीन्द्र घोष एवं भूपेन्द्रनाथ के सहयोग से ही 1907 ई. में मिदनापुर में 'अनुशीलन समिति' का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य था 'खून के बदले खून'। 'अनुशीलन समिति' के अलावा बंगाल की 'सुह्रद समिति' (मायसेन सिंह), 'स्वदेशी बांधव समिति' (वारीसाल), 'वृती समिति' (फरीदपुर) आदि क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करती थीं। अनेक क्रान्तिकारी समाचार पत्रों का भी बंगाल से प्रकाशन शुरु हुआ, जिसमें ब्रह्म बंद्योपाध्याय द्वारा प्रकाशित 'सन्ध्या', अरविन्द्र घोष द्वारा सम्पादित 'वन्देमातरम', भूपेन्द्रनाथ दत्त द्वारा सम्पादित 'युगान्तर' आदि प्रमुख थे।

- **पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन**

पंजाब में 1906 ई. के प्रारम्भ में ही क्रान्तिकारी आन्दोलन फैल गया था। पंजाब सरकार के एक 'उपनिवेशीकरण विधेयक' के कारण किसानों में व्यापक असन्तोष व्याप्त था। इसका उद्देश्य चिनाब नदी के क्षेत्र में भूमि की चकबन्दी को हतोत्साहित करना तथा सम्पत्ति के विभाजन के अधिकारों में हस्तक्षेप करना था। इसी समय सरकार ने जल कर में वृद्धि करने का फैसला किया, जिससे जनता में असन्तोष फैल गया। इस तूफ़ान को उठता देखकर सरकार बेचैन हो गई। उसने रावलपिन्डी में आन्दोलन को कुचलने की दृष्टि से सार्वजनिक सभाओं पर रोक लगा दी तथा लाला लाजपत राय व अजीत सिंह को गिरफ्तार कर माण्डले जेल भेज दिया गया। 1915 ई. में पंजाब में एक संगठित आन्दोलन की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें निश्चित किया गया कि 21 फ़रवरी, 1915 को सम्पूर्ण उत्तर भारत में एक साथ क्रान्ति का बिगुल बजाया जाय।

- **महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन**

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन को उभारने का श्रेय लोकमान्य तिलक के पत्र 'केसरी' को जाता है। तिलक ने 1893 ई. 'शिवाजी उत्सव' मनाना आरम्भ किया। इसका उद्देश्य धार्मिक कम राजनीतिक अधिक था। महाराष्ट्र में 1893-1897 ई. के बीच प्लेग फैला व अंग्रेज़ सरकार ने मरहम लगाने के बजाय दमन कार्य किया। अतः 22 जून, 1897 ई. को प्लेग कमिश्नर अयरस्ट की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इस सम्बन्ध में दामोदर चापेकर को पकड़कर मृत्यु दण्ड दे दिया गया। तिलक को भी विद्रोह भड़काने के आरोप में 18 माह का कारावास दिया गया। 1908 ई. में बम्बई प्रांत के चार देशी भाषा के समाचार पत्रों पर सरकार ने कहर ढाया। 24 जून, 1908 ई. को तिलक को फिर गिरफ्तार किया गया और 'केसरी' में प्रकाशित लेखों के आधार पर पहले तो उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया, फिर 6 वर्ष की सज़ा दे दी गई।

उपसंहार

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एक महान राष्ट्रभक्त होने के साथ-साथ वर्ण राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और चिंतक भी थे। उनकी विचारधारा ने तत्कालीन समय में तिलक युग की शुरुआत की थी। बाल गंगाधर तिलक जी ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी थी। उनका दिया हुआ नारा कि 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' सभी भारतीयों के लिए गौरवमयी और स्वाभिमान का प्रेरणास्त्रोत है। बाल गंगाधर तिलक जी ने जो महान कार्य किये थे उनकी वजह से वे भारत के इतिहास में हमेशा अमर और महान पुरुषों में गिने जायेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. प्रो0 वी0पी0 वर्मा; आधुनिक भारतीय राजनीति का चिन्तन, 1998 पृ0 237 |

2. बाल गंगाघर तिलक; गीता रहस्य (हिन्दी संस्करण), पृ0 357 |

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

3. वही, पृ0 562 |
4. बालगंगाघर तिलक; ट्रायल (1980) पृ0 138 |
5. मराठा में प्रकाशित पत्र; तिलक का विलसन और क्लिमेंन्सो को लिखा गया पत्र।
6. प्रो० वी0पी0 वर्मा; आधुनिक भारतीय राजनीति का चिन्तन, 1998 पृ0 252 |
7. एन0जी0 जोग; लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, तृतीय संस्करण, मई 1997, पृ0 45।
8. एम0ए0 वुड; राइज एण्ड ग्रोथ आफ मिलिटेण्ट नेशनलरीजय; गुडकम्पेनियना बड़ौदा, 1940, पृ0 45 |
9. डॉ0 पुरूषोत्तम नागर; आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीति चिंतन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, सप्तम् संस्करण, 2003, पृ0 191 |
10. ऐन एक्लोलोजी आफ मार्डन इण्डियन एलोक्वैन्स, पृ0 51-52 |